शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA

एक बार इरेडा, सदैव इरेडा
(नवरत्न सीपीएसई)

अक्षय क्रांति

ई-पत्रिका

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड
(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

अक्षय क्रांति

संरक्षक

श्री प्रदीप कुमार दास

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मार्गदर्शक

डॉ. बिजय कुमार महान्ती

निदेशक (वित्त)

परामर्शदाता

श्रीमती माला घोष चौधुरी

महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव

उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहसंपादक

श्री आलर कुल्लू, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री अजय कुमार गुप्ता, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री रोहित कुमार साव, उप प्रबंधक (राजभाषा)

सुश्री तुलसी, वरिष्ठ निजी सचिव (हिंदी)

(इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं

सरकार अथवा इरेडा का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।)

प्रदीप कुमार दास

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरेडा

संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि इरेडा की हिंदी ई-पत्रिका 'अक्षय क्रांति' की नवीनतम संस्करण प्रकाशित की जा रही है । मुझे इस बात का भी खुशी है कि भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड कंपनी में हिंदी में मौलिक लेखन को बढ़ावा देने के मिशन के साथ इस पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया गया था । हिंदी ई-पत्रिका 'अक्षय क्रांति' का प्रकाशन, भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की दिशा में एक सराहनीय और महत्वपूर्ण कदम है । इस पत्रिका के प्रकाशन से इरेडा कर्मियों के मौलिक लेखन का सृजन होता है । इस पत्रिका के नियमित प्रकाशन से हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी की चंहुमुखी प्रगति हुई है ।

इरेडा भारत देश की एक सबसे बड़ी विशुद्ध ग्रीन फाइनेंसिंग कंपनी है जोकि अपनी स्थापना के बाद से ही अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं को स्थापित करने, बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है जिसका आदर्श वाक्य: " शाश्वत ऊर्जा" है । साथ ही,इरेडा कंपनी गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा समय -समय पर जारी दिशा-निर्देशों और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहा है और कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है । इरेडा के सभी कर्मियों से मेरा अनुरोध है कि वे अपनी मौलिक रचनाएं,लेख और कहानियां आदि निरंतर भेजकर अपना योगदान करते रहें ।

जैसा कि आप सभी को विदित है कि हमने अभी -अभी नव वर्ष 2026 की दहलीज पर कदम रखा है । इस संबंध में मैं संस्थान के प्रबंधन, निदेशक मंडल की ओर से आपको एवं आपके परिवार को खुशियों, अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि से भरे एक शानदार वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

बीता वर्ष चुनौतियों से भरा रहा, लेकिन आपकी असाधारण प्रयासों, टीम भावना और अटूट प्रतिबद्धता के कारण ही हमने कई महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त किया और नई ऊँचाइयों को छुआ। मैं आपके समर्पण के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

नूतन वर्ष हमारे लिए नई संभावनाओं, नवाचारों और विकास के अवसरों को लेकर आया है। मुझे पूरा विश्वास है कि हम सभी मिलकर, एकजुट होकर, अपनी कंपनी को गत वर्ष से भी बड़े सफलता की ओर ले जाएंगे। आइए, हम सब मिलकर एक ऐसे कार्यस्थल का निर्माण जारी रखें जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को महत्व दिया जाता है और उसके योगदान की सराहना की जाती है।

आप सभी का भविष्य उज्जवल और सफल हो। आपके व्यक्तिगत और कार्यालयी जीवन में खुशहाली बनी रहे।

एक बार फिर, आपको और आपके प्रियजनों को नव वर्ष की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ!

****

डॉ. बिजय कुमार महान्ती

निदेशक (वित्त), इरेडा

संदेश

प्रिय साथियों,

यह अत्यंत हर्ष का विषय कि इरेडा की ई-पत्रिका 'अक्षय क्रांति' के इस नवीनतम अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह पत्रिका ना केवल कंपनी के कर्मचारियों के बीच हिंदी भाषा के अभिव्यक्ति और साहित्य के प्रचार- प्रसार का माध्यम है, बल्कि उनके मध्य एकता और संवाद स्थापित करने के लिए भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

संवैधानिक व्यवस्था अनुसार संघ की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुनिश्चित करना केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालयों का दायित्व है। इसके साथ साथ गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा समय -समय पर राजभाषा संबंधी दिशा-निर्देश जारी किए जाते हैं, जिसका इरेडा कार्यालय में अनुपालन करना आवश्यक है। हिंदी भाषा हमारी संस्कृति और विरासत का एक अभिन्न अंग है। विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में विविधता को एक सूत्र में पिरोने और जोड़ने का कार्य हिंदी भाषा कर रही है। हिंदी भाषा की सरलता,सुगमता और सहज प्रवृत्ति के कारण विश्व स्तर पर भी सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा के रूप में हिंदी बनती जा रही है। आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण के इस युग में राजभाषा हिंदी का महत्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है। यह व्यापार की भाषा का माध्यम भी बनती जा रही है। इरेडा कार्यालय में हिंदी के विकास में सभी का योगदान अपेक्षित है और मुझे प्रसन्नता है कि इस दिशा में इरेडा परिवार द्वारा सतत प्रयास किए जा रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि प्रकाशित की जा रही ई-पत्रिका 'अक्षय क्रांति' राजभाषा हिंदी के कार्यों को गति देगी और राजभाषा हिंदी के प्रति इरेडा की प्रतिबद्धता को और ऊँचाई प्रदान करने का माध्यम बनेगी। आइए, हम अपने कंपनी और राजभाषा हिंदी के लिए नई उपलब्धियों को प्राप्त करने का संकल्प लें और इस दिशा में समर्पण के साथ कार्य करें।

मैं, इरेडा के सभी कर्मियों को शुभकामना देते हुए इस पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

****

माला घोष चौधुरी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संदेश

इरेडा की हिंदी ई-पत्रिका 'अक्षय क्रांति' की नवीन अंक एक नए रंग रूप एवं नए रचनाओं के साथ आप सभी से संवाद करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है ।

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड (इरेडा) द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार करने तथा इरेडा कार्मिकों की हिंदी लेखन प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिंदी ई-पत्रिका 'अक्षय क्रांति' की नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है । यह पत्रिका विभिन्न कार्मिकों के विचारों,अवधारणाओं और मन की बातों को व्यक्त करने का एक मंच प्रदान करती है ।

नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से संबंधित परियोजनाओं के कार्यान्वयन के माध्यम से देश के सतत विकास करने के लिए इरेडा लगी हुई है । साथ ही साथ, अपने व्यवसाय के अलावा समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाहन करते हुए कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पहल के अंतर्गत समाज और वंचित लोगों की उन्नति और कल्याण के लिए भी इरेडा द्वारा विभिन्न नवोन्मेषी और उल्लेखनीय कार्य की जा रही है और इन सभी उल्लेखनीय काम में एवं देश के विभिन्न स्थानों तथा विभिन्न लोगों तक पहुँच बनाने में हिंदी भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है । विश्व स्तर पर भी हिंदी भाषा एक व्यापार और संप्रेषण का माध्यम बन रही है ।

इस पत्रिका की प्रकाशन की सफलता की कामना करती हूँ । मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिंदी ई - पत्रिका अक्षय क्रांति' राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास में एक मील का पत्थर साबित होगी ।

****

दिनांक 13.11.2025 को इरेडा में नव नियुक्त कार्यपालक प्रशिक्षुओं के हिंदी ज्ञान संबंधी परीक्षा का आयोजन ।

दिनांक 25.11.2025 को श्रीमती शीबा जयराज, उप निदेशक (राजभाषा), नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय अपनी टीम के साथ इरेडा का राजभाषाई निरीक्षण से संबंधित झलकियां ।

दिनांक 03.12.2025 को इरेडा में सरकारी पत्राचार में सरल हिंदी का प्रयोग" विषय पर विशेषज्ञ,श्री नरेश कुमार, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा हिंदी कार्यशाला का संचालन करते हुए ।

नराकास (उपक्रम -1), नई दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 11-12-2025 को इरेडा द्वारा आयोजित सूक्ति लेखन प्रतियोगिता से संबंधित झलकियां

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचना वर्ग	लेख/कविता रचिता श्री/सुश्री	पृष्ठ संख्या
1.	मैं राजा हूँ	लेख	स्वेता गुप्ता, उप महाप्रबंधक (परियोजना), इरेडा	1
2.	सृजन	कविता	संगीता श्रीवास्तव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), इरेडा	2
3.	लघु कहानी -जादुई स्पर्श	लघु कहानी	आशुतोष भूयां, उप महाप्रबंधक (परियोजना), इरेडा	3
4.	ऊर्जा परिवर्तन: कैसे नवीकरणीय ऊर्जा हमारे भविष्य को नई दिशा दे रही है	लेख	पीयूष अग्रवाल, प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा	4
5.	वो आखिरी पेड़	लेख	रोमेश कुमार गुप्ता, प्रबंधक (वित्त तथा लेखा) इरेडा	6
6.	प्रदूषण -दिल्ली की चुनौती	लेख	आलर कुल्लू, प्रबंधक(राजभाषा), इरेडा	8
7.	दीपावली: भगवान को अपने हृदय में पुनः आमंत्रित करना	लेख	गौरव वार्ष्णेय, उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा	10
8.	"स्वास्थ्य ही धन है"	लेख	रिजवान अथर, उप प्रबन्धक(सचि.) इरेडा	12
9.	यात्रा-वृतांत : "झीलों की नगरी – उदयपुर की अविस्मरणीय यात्रा"	लेख	अनुष्का कुमारी, उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा), इरेडा	14
10.	यात्रा वृतांत "नैनीताल का एक दिन"	लेख	हजारी लाल, सहायक प्रबंधक(सामान्य), इरेडा	16
11.	सपनों की अनन्त रोशनी	कविता	साक्षी साव, कार्यपालक प्रशिक्षु, इरेडा	17
12.	ऑटोबायोग्राफी ऑफ़ योगी – सारांश	लेख	शुभम सिंह, कार्यपालक प्रशिक्षु (परियोजना)	19
13.	हिंदी भाषा के विकास में पत्रकारिता की भूमिका	लेख	वरुण भारद्वाज, उप प्रबंधक (राजभाषा), केंद्रीय भंडारण निगम, निगमित कार्यालय	20
14.	ऊर्जा का रहस्य	लेख	रोहित कुमार साव, उप प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा	22

स्वेता गुप्ता
उप महाप्रबंधक (परियोजना), इरेडा

मैं राजा हूँ

आज हम डिजिटल वर्ल्ड से पूरी तरह घिरे हुए हैं। बाहर की दुनिया से अपने अंदर की दुनिया को प्रभावित कर रहे हैं। जबकि नियम कहता है- हमें अंदर से बाहर की ओर जाना चाहिए और आज हम बाहर से अंदर की ओर सफर कर रहे हैं।

ये जान तो रहे हैं कि बाहर गंध मची है, पर इन्हीं में उलझे हुए हैं। अपना कितना नुकसान हो रहा है, इस समझ से अनभिज्ञ हैं। ये तो सभी ध्यान रखते हैं कि बाहर से आने के बाद अपने जूते - चप्पल को एक निर्धारित जगह पर रखें और साफ चप्पल पहने ताकि बाहर की धूल-मिट्टी से हमारा घर गंदा न हो जाए। परंतु इस नियम को हम अपने विचारों में क्यूँ नहीं अपनाते?

आज हमारा मन एक ऑक्टोपस की तरह है। जैसे वो अपने टेंटेकल्स को आठ अलग-अलग दिशाओं में फैलाता है, हमारे मन की तारें भी पूरी तरह बाहरी दुनिया से कनेक्टेड हैं। बाहर से हम ऐक्सेप्टन्स, अप्रूवल, लाइक्स आदि के लिए क्या-क्या नहीं करते। हर सीमा को पार जाते हैं।

सत्य तो यह है कि हम अपने मन और बुद्धि के राजा हैं। राजा के पास तो कंट्रोलिंग पावर और रुलिंग पावर होता है। पर हम इस नियम के विपरीत जा रहे हैं- उदाहरण के लिए आप नीचे दिये गये चित्र का संदर्भ ले सकते है जिसमें किस प्रकार ऑक्टोपस ने अपने पूरे राज्य की कमान बाहर की दुनिया (सोशल मीडिया) को सौंप रखा है।

इसे हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें स्वाधीन बनना है और अपने राज्य की कमान खुद ही संभालनी है। अगर हम यह कर पा रहे है तो यहीं वास्तव में उन्नति है।

****

संगीता श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक (राजभाषा), इरेडा

सृजन

जाग रहा हूँ या सो रहा हूँ
सोच रहा हूं या खोज रहा हूँ
बहुत कुछ करना चाहता हूँ
ऐसा कुछ करना चाहता हूं
जो बता सके मैं सृजन हूं
मैं सृष्टि को बनाने का वो
नियम हूँ जिससे
बना है सब कुछ
है यहां सब कुछ का सृजन हुआ है
खुशियों भरा ये अनुपम संसार
सृजन हुआ है
सारी आकांक्षाओं और सारी तृप्तियों
का ये संसार सृजन हुआ है
सृजन हैं इस संसार इस
का आधारभूत नियम
सब जानता हूँ मैं तभी तो
मैं भी एक ऐसी रचना
का सृजन करना चाहता हूँ
जैसी कभी किसी ने कहीं भी
परिकल्पना नहीं की हो
पर अभी तो मैं सोचता ही रहता हूँ
कि बनाऊँ कुछ जैसा जो
सपनों के संसार से भी सुन्दर हो
जिसे देख के मेरे अपने सब कहे
ये हमारे सृजन का सृजन है,अनुपम, अद्वितीय, इतिहास जैसा

****

आशुतोष भूयां,
उप महाप्रबंधक (परियोजना), इरेडा

लघु कहानी - जादुई स्पर्श

प्रताप बाबू और उमा देवी। कितने आशा और अनगिनत सपनों के साथ वे विवाह के बंधन में बंधे थे। अपने-अपने जीवन के दुःख को सीने से लगाए, उन्होंने सात जन्मों का साथ निभाने के लिए एक-दूसरे का हाथ थामा था। एक-दूसरे को समझने के लिए, मरहम लगाने के लिए। एक नई सुबह की शुरुआत करने के लिए।
इसके बीच, कुछ दिन बीत चुके हैं। जीवन के उतार-चढ़ाव से होते हुए सुख-दुःख का यह संसार आगे बढ़ रहा है। कभी वहाँ प्रेम का ज्वार आया है, तो कभी महाचक्रवात का प्रलय। कभी अंतिम साँस तक साथ रहने का वादा है, तो कभी तलाक की दारुण संभावना। कभी प्रताप बाबू अपने पुरुषत्व के अहंकार में भूल कर बैठते हैं, तो कभी उमा देवी अपने क्रोध और रूठने से दूरी बढ़ा देती हैं। फिर भी, अनिश्चितता के अथाह सागर में, जीवन की नैया आगे-आगे बढ़ती जा रही है, किसी अदृश्य नाविक के भरोसे।
जैसे कि, कुछ दिन पहले प्रताप बाबू बाज़ार से कुछ मीठे भुट्टे खरीदकर लाए थे। लेकिन काम की अधिकता और संसार की झंझावातों के बीच उमा देवी उन्हें भूल गई थीं। दस दिन बाहर पड़े-पड़े भुट्टे सूख गए और रसहीन हो गए थे। दोपहर में प्रताप बाबू ने तो उन्हें कूड़ेदान में विसर्जित करने का मन भी बना लिया था।
लेकिन उस दिन शाम को, उमा देवी के कुशल हाथों से बने स्वादिष्ट भुट्टे के पीठा (यानी, एक प्रकार का केक/पैनकेक) खाते समय, आँखों में दो बूँद आँसू आ गए और सीने में एक टीस उठ गई। प्रताप बाबू सोच रहे थे, "आह! कितना सुंदर! यही तो वास्तविकता है!" अगर प्यार और देखभाल से रसहीन भुट्टे का यह रूपांतरण हो सकता है, तो उमा देवी के प्रेम और अपनाने से प्रताप बाबू के जीवन में अविश्वसनीय परिवर्तन आ सकता है। फिर से यह गहरा रिश्ता हँस उठेगा, प्रेम का कोणार्क (एक सुंदर मंदिर) निर्मित होगा। यही तो वह अदृश्य नाविक है—उमा देवी का जादुई स्पर्श।

****

पीयूष अग्रवाल
प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

ऊर्जा परिवर्तन: कैसे नवीकरणीय ऊर्जा हमारे भविष्य को नई दिशा दे रही है

आज जब पृथ्वी और उसके संसाधनों के स्वास्थ्य की चर्चा हर कोने में सुनाई दे रही है, तब "नवीकरणीय ऊर्जा" केवल एक तकनीकी शब्द नहीं रहा — बल्कि वह वैश्विक परिवर्तन का केंद्र बन गया है। सूरज की किरणों से चलने वाले सोलर पैनल्स से लेकर हवा में घूमती पवन टरबाइनों तक, समुद्र की लहरों से उत्पन्न ऊर्जा से लेकर हरित-हाइड्रोजन तक — हमारी दुनिया अब स्वच्छ, स्मार्ट और टिकाऊ ऊर्जा की ओर तेजी से बढ़ रही है।

कुछ दशक पहले तक नवीकरणीय ऊर्जा को महँगा, प्रयोगात्मक और अव्यवहारिक माना जाता था। पर आज यह एक बहु-अरब डॉलर का उद्योग बन चुका है, जो आर्थिक विकास, नवाचार और रोजगार का नया आधार बन रहा है। उदाहरण के लिए, भारत में सोलर पैनल्स की कीमत अब पहले की तुलना में करीब **90 % तक गिर चुकी** है, जिससे इसकी व्यवहार्यता तेजी से बढ़ी है। इसी तरह, पवन टरबाइन अब पहले से अधिक ऊँचे, अधिक शक्तिशाली और अधिक कुशल हो चुके हैं। ऐसी प्रगति ने नवीकरणीय ऊर्जा को "विकल्प" से बदलकर "मुख्य धारा" में ला दिया है।

लेकिन यह बदलाव सिर्फ बिजली उत्पादन तक सीमित नहीं है। यह हमारे जीवन-शैली और रोजमर्रा की दुनिया दोनों को बदल रहा है। आज घरों की छतों पर सोलर पैनल्स लगते हैं, शहरों में इलेक्ट्रिक वाहन चलने लगे हैं, स्मार्ट बैटरियाँ एवं ग्रिड-प्रबंधन उपकरण आम हो रहे हैं, और उद्योग-कारखानों में "ग्रीन" ऊर्जा समाधान-मॉड्यूल स्थापित हो रहे हैं। इन परिवर्तनों के पीछे एक बड़ा कारण है — न सिर्फ तकनीकी सुधार बल्कि **वित्तीय सक्रियता, नीति समर्थन और निवेश-उत्साह** भी।

यहाँ पर **भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड (इरेडा)** की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इरेडा को 11 मार्च 1987 को सार्वजनिक कंपनी के रूप में स्थापित किया गया था, जिसका उद्देश्य नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों तथा ऊर्जा कुशलता/संरक्षण परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देना है। उसी दिशा में इरेडा ने वर्ष 2024-25 में अब तक के अपने उच्चतम ऋण स्वीकृति और वितरण का रिकॉर्ड दर्ज किया | साथ ही, इरेडा ने "कॉर्पोरेट गवर्नेंस", "सामाजिक उत्तरदायित्व एवं स्थिरता" जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार-समारोह में गोल्ड तथा सिल्वर पुरस्कार प्राप्त किए हैं। इन उपलब्धियों से स्पष्ट है कि सिर्फ तकनीक नहीं, संस्थागत दृष्टिकोण और वित्त-संरचना भी इस ऊर्जा क्रान्ति में मार्गदर्शक बन रही है।

नवीकरणीय ऊर्जा के इस बदलाव ने न सिर्फ पर्यावरण की दिशा में कदम उठाए हैं बल्कि सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को भी बदल रहे हैं। उदाहरण के लिए, ग्रामीण भारत के ऐसे गाँव जहाँ पहले नियत बिजली-संपर्क नहीं था, वहाँ सोलर-ऊर्जा-प्रोजेक्ट्स बिजली पहुँचाने के साथ ही रोजगार-और-उद्यम के अवसर भी ला रहे हैं। ये "हरित रोजगार" (ग्रीन जॉब्स) इंजीनियर्स, तकनीशियन, इंस्टॉलर, शोधकर्ता तथा स्थानीय उद्यमियों के लिए नए रास्ते खोल रहे हैं।

इस परिवर्तन के लाभ अनेक हैं — स्वच्छ हवा, कम कार्बन उत्सर्जन, जीवाश्म ईंधन की निर्भरता में कमी। लेकिन साथ ही चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। निवेश-मात्र बहुत बड़ी है, नीति-सहयोग आवश्यक है, और सामाजिक-स्वीकृति तथा व्यवहार-परिवर्तन भी जरूरी है। उदाहरण के लिए, नवीकरणीय परियोजनाओं में

सोलर पैनल्स और बैटरियों में उपयोग होने वाले खनिज-संसाधनों (जैसे लिथियम, रेयर अर्थ मेटल्स) के सतत उपयोग तथा निष्पक्ष श्रृंखला सुनिश्चित करना आज भी एक बड़ी चुनौती है।

इरेडा जैसे संगठन इन चुनौतियों से निपटने के लिए आगे बढ़ रहे हैं — उदाहरणस्वरूप, उन्होंने नई-प्रौद्योगिकी एवं उभरती-ऊर्जा स्रोतों को फाइनेंस करने की नीतियाँ बनाई हैं। ऐसे संस्थागत प्रयास संकेत देते हैं कि ऊर्जा परिवर्तन सिर्फ बाज़ार-घटना नहीं रहा — यह **नैतिक और व्यावहारिक आवश्यकता** बन चुका है।

आज हमारे सामने यह स्पष्ट है कि ऊर्जा क्रांति की यह लहर अब पीछे नहीं हटने वाली। अब सवाल यह नहीं है कि क्या हम पूरी पृथ्वी को नवीकरणीय ऊर्जा से चला सकते हैं, बल्कि यह है **कितनी जल्दी** और **कितनी न्यायसंगत तरीके से** हम इसे कर पाएंगे। जब देश-राज्य, उद्योग-क्षेत्र, और नागरिक-समाज मिलकर काम करें, तब 500 गीगावाट से ज्यादा की नॉन-फॉसिल क्षमता 2030 तक हासिल करना एवं 2047 तक विकसित एवं स्वच्छ भारत का सपना साकार करना संभव है। वास्तव में, इरेडा समेत अनेक संस्थाओं का योगदान इस दिशा में हमारी उम्मीदों को गति दे रहा है।

अतः, हर नया सोलर पैनल जो हमारी छत पर लगाया जाता है, हर पवन टरबाइन जो हवा में घूमती है, और हर बैटरी-सिस्टम जो ऊर्जा संग्रहित करता है — ये सिर्फ उपकरण नहीं, **हमारे भविष्य की बुनियाद** हैं। आइए हम सब मिलकर ऐसी ऊर्जा-दृष्टि को अपनाएँ जहाँ ऊर्जा न सिर्फ सस्ती और निर्बाध हो, बल्कि स्वच्छ, स्थायी और समावेशी भी हो।

****

रोमेश कुमार गुप्ता
प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

वो आखिरी पेड़

गाँव के किनारे बूढ़े दादू का खेत और उसके बीचों-बीच खड़ा विशाल पीपल का पेड़, दोनों ही एक-दूसरे की कहानी के साक्षी थे और इतिहास की एक लंबी फेहरिस्त की तरह अनेक स्मृतियों को खुद में संजोए हुए थे। दादू की उम्र के साथ-साथ पेड़ की जड़ें भी गहरी होती गईं और डालें भी मजबूत हो गईं थीं, जैसे वर्षों की धूप-छाँव से तराशे गए अनुभव। यह पेड़ दादू के लिए सिर्फ एक पेड़ नहीं, बल्कि उनके बचपन का खेल का मैदान, जवानी का साथी और बुढ़ापे की शांति का एक ऐसा स्थान था जहाँ हर मौसम ने उसे अपनी कहानी से रूबरू करवाया था। पर अब, एक नई सड़क परियोजना की नीली-सफेद निशानदेही ने इसकी जड़ों को खतरे में डाल दिया था, और रास्ते की यह बनावट अब पेड़ के अस्तित्व के सामने एक बड़ी चुनौती बन चुकी थी।

जब से बुलडोजर आने की तारीख तय हुई थी, दादू की दिनचर्या बदल गई थी। वह सुबह-शाम अपनी लकड़ी की छड़ी थामे, पेड़ के नीचे चट्टान की तरह बैठ जाते, मानो एक स्थिर तंत्र की तरह वह अपने इतिहास के साथ निर्द्वंद्व स्मृति-घड़ी को टिकते देखते रहते। गाँव के लोग उन्हें समझाते, "दादू, यह तो होना ही था। विकास की कीमत चुकानी पड़ती है,"—लेकिन वे इस सरल तर्क के सामने भीतरी पीड़ा से भरे उत्तर को ही दोहराते, एक ऐसी आवाज में जिसमें दर्द गूंज रहा होता, और कहते, "यह पेड़ तुम्हें रास्ते का रोड़ा दिखता है, मुझे तो अपनी बीतती हुई ज़िंदगी का आखिरी सहारा दिखता है। इसकी छाँव में मेरे पिता ने आराम किया था और मेरे बच्चे खेले थे। क्या विकास नाम है इन यादों को मिटा देने का?" उनके शब्दों में एक धीरज और एक पीड़ा का संगम था, जो हर किसी के समझने के लिए एकदम स्पष्ट नहीं था, फिर भी वही गेय आवाज़ में गहराई से निकलती थी।

यह सब देख रही थी दादू की बारह साल की नातिन, नेहा। वह दादू के चेहरे पर छाई उदासी को सहन नहीं कर पा रही थी, और उसने अपने इस नन्हे मन में एक आवाज के रूप में स्पष्ट संकेत पाया था। एक शाम, जब दादू पेड़ की डालियों को सहलाते हुए बैठे थे, नेहा ने उनके पास बैठकर कहा, "दादू, लड़ाई छड़ी से नहीं, दिमाग से जीती जाती है।" उस छोटी सी आवाज के साथ उसने एक अद्भुत दृढ़ता और निश्चय के संकेत छोड़े, मानो बड़ा-सा पाठ उसने खुद अपने शब्दों में पढ़ा हो।

उसने अपनी स्कूल की किताबें और इंटरनेट से डाउनलोड किए गए नक्शे निकाले। घंटों मेहनत करके उसने देखा कि सड़क का रास्ता दादू के खेत के दूसरे, बंजर किनारे से होकर भी आसानी से निकल सकता है, और यह सोच एक नयी रोशनी बनकर उनके सामने उभर आई। पर उसकी असली चालाकी तो अगले कदम में

थी। उसने एक विस्तृत प्रस्ताव तैयार किया, जिसमें दिखाया कि अगर सड़क को थोड़ा मोड़ दिया जाए, तो खाली पड़ी बंजर जमीन पर एक सोलर पावर स्ट्रीट लाइट लगाई जा सकती है, ताकि रात में भी क्षेत्र के लोग सुरक्षित और सस्ता-ऊर्जा स्रोत पा सकें। उसने गणित लगाकर दिखाया कि यह विकल्प लंबे समय में ज्यादा किफायती भी होगा, साथ ही पर्यावरण पर भी कम प्रभाव डालेगा।

अगले दिन, नेहा अपने इस प्रस्ताव के साथ सरपंच और इंजीनियर साहब के सामने पहुँच गई। शुरू में तो सबने उसकी बात को एक बच्ची की सनक समझा, लेकिन जब उसने अपनी बात तर्क और आंकड़ों से रखी, तो सब हैरान रह गए। इंजीनियर साहब ने मुस्कुराते हुए कहा, "इस बच्ची ने तो हम इंजीनियरों को पढ़ा दिया। यह तो जीत-जीत का फैसला है।" उनके शब्दों में एक नई प्रशंसा की लहर दौड़ गई और वातावरण में एक आश्वस्ति का संदेश फैल गया।

कुछ हफ्तों बाद, सड़क का रास्ता बदल दिया गया। अब वह मार्ग वैसा नहीं रहा जैसा पहले था, बल्कि नेहा की योजना के अनुसार मोड़ लिया गया। आज दादू का वह आखिरी पेड़ वैसे ही गर्व से खड़ा है, उसकी हरी-भरी डालियाँ हवा में ऐसे झूम रही हैं जैसे जीवन का जश्न मनाने के लिए तैयार हों। और उसकी छाँव तले लगी चमचमाती सोलर लाइट न सिर्फ रात के अंधेरे को भगाती है, बल्कि यह भी याद दिलाती है कि सच्चा विकास वही है जो प्रकृति का दिल दुखाए बिना होता है। दादू की आँखों में अब वह संघर्ष नहीं, बल्कि एक गहरा सुकून और अपनी नातिन पर अटूट गर्व था, जैसे उसने अपने परिवार के साथ एक बड़ी जीत हासिल कर ली हो—एक ऐसी जीत जिसे उसने पहले कभी नहीं समझा था, पर अब समझ गया था कि कैसे धैर्य, समझदारी और प्रेम से विकास भी संभव और मानवीय बन सकता है।

****

आलर कुल्लू
प्रबंधक(राजभाषा),इरेडा

प्रदूषण -दिल्ली की चुनौती

प्रदूषण का अर्थ है हमारे पर्यावरण में जैसेकि वायु, जल, मिट्टी,ध्वानि आदि का अवांछित और हानिकारक पदार्थों से दूषित होना, जिससे जीव -जंतुओं और पारिस्थितिकी प्रणाली पर प्रत्यक्ष रूप से नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और इनके अस्तित्व पर भी प्रभाव डालता है । प्रदूषण के बारे में गागर में सागर और समाधान इस प्रकार भरे गए हैं :

वायु प्रदूषण - दिल्ली भारत देश की राजधानी होने के नाते सभी प्रकार की गतिविधियों का केंद्र बिंदु है । कहा जाता है कि भारत देश के हर नागरिक का दिल दिल्ली में वसता है। दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय और अंतरराज्यीय हवाई अड्डे हैं इसमें हरेक एक मिनट से पाँच मिनट के अंतराल में हवाई जहाज उतरता है और उड़ान भरता है और हवाई जहाज के ईंधन के दहन से वायु मंडल में वायु प्रदूषण होता है जिससे वायु मंडल का तापमान बढ़ रहा है और ओज़ोन परत कमजोर हो रही है जिसके कारण इसका प्रभाव धरती और मानव पर पड़ रहा है ,जिसके कारण विभिन्न प्रकार की बीमारियों का प्रकोप बढ़ गया है । दिल्ली के सड़कों में दौड़ते बसों ,मोटर कार आदि से निकलते धुआँ से भी अत्याधिक वायु प्रदूषण बढ़ रहा है और हवा में हानिकारक गैसों, धुएं और धूल के कणों का घुलने के कारण वायु की गुणवत्ता सूचकांक श्रेणी बहुत खराब श्रेणी में आता है जिससे यहाँ दिल्ली वासियों को श्वांस संबंधी कई बीमारियां जकड़ रही है ।

जल प्रदूषण- दिल्ली जैसे महानगर में प्रत्येक आदमी को शुद्ध पीने का पानी उपलब्ध कराना बहुत बड़ी चुनौती है । दिल्ली की शहरीकरण,बढ़ती आबादी, मल-मूत्र की अव्यवस्थित नाले,औद्योगिकरण के कारण पानी में कचरा, रसायन, और औद्योगिक कचरे का मिलन आदि से दिल्ली की जीवन रेखा कही जानेवाली यमुना की नदी को निरंतर प्रदूषित करती चली जा रही है और इसमें शीशा की मात्रा बहुत अधिक है,जिससे जलीय जीव -जन्तु,पशु और इंसानों को जल प्रदूषण का बुरा प्रभाव पड़ता है ।

मृदा प्रदूषण-दिल्ली में बढ़ती आबादी,शहरीकरण,कटते और कम होते पेड़-पौधे और बढ़ती कंक्रीट के जंगल के परिणामस्वरूप धरती माता रो रही है । रही सही कसर मेट्रो लाइन ने पूरी कर दी है ।आवागमन की सुविधा के लिए मेट्रो रेल लाइन बिछाने के लिए दिल्ली की मिट्टी को कई फिट नीचे तक खोद दिये गए हैं , परिणामस्वरूप मिट्टी व भू खंड कम होता जा रहा है ,खेती -बाड़ी की जमीन में कमी हो रही है,जिसके कारण मिट्टी में पनपने वाले जीव-जंतुओं के अस्तित्व के लिए खतरा उत्पन्न हो रहा है ।

ध्वनि प्रदूषण- दिल्ली की एक और बड़ी समस्या है – ध्वनि प्रदूषण । मोटर कार,बस, रेल और हवाई जहाज आदि के इंजन और हॉर्न के अवांछित और तीब्र शोर के परिणामस्वरूप ध्वनि प्रदूषण निरंतर बढ़ती जा रही है और इसका नकारात्मक प्रभाव इंसानों पड़ता है ।

कहावत है **"हर मर्ज़ की दवा**" है जिसका अर्थ है "**हर बीमारी का इलाज**" । समस्या है तो समाधान भी है । दिल्ली के बोझ को कम करने के लिए वैकल्पिक राजधानी बनानी होगी । केंद्र सरकार के सभी मुख्यालयों

को अन्य राज्यों में स्थानांतरण करना होगा । दिल्ली को हरित क्षेत्र बनाना है जिससे अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाने होंगे जिससे पेड़- पौधे एयर प्युरीफायर का काम करेंगे और हमें शुद्ध ऑक्सीज़न मिलेगा । विद्युत और हरित ऊर्जा आधारित आवागमन वाहनों का उपयोग करने होंगे जिससे वायु प्रदूषण में कमी होगी । बढ़ती विद्युत और ऊर्जा की मांग को अक्षय ऊर्जा के नवीन और नवीकरणीय स्रोत जैसे सौर ऊर्जा ,पवन ऊर्जा ,पन बिजली,जैव -ईंधन आदि के स्रोतों से पूरे करने होंगे ।

"अक्षय ऊर्जा, और हरित वित्तपोषण के विजन के साथ दिल्ली की हरेक समस्या का समाधान ! अक्षय ऊर्जा का विकास,दिल्ली का विकास !

****

गौरव वार्ष्णेय

उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

दीपावली: भगवान को अपने हृदय में पुनः आमंत्रित करना

दीपावली भारत के लगभग हर घर में मनाया जाने वाला एक प्रमुख पर्व है। इस दिन घरों को सजाया जाता है। दीपक और पटाखे जलाए जाते हैं, मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं और चारों ओर उत्सव का माहौल छा जाता है। परंतु रंगीन रोशनी और उल्लास के पीछे दीपावली का एक गहन आध्यात्मिक संदेश छिपा है — जो हमारे हृदयों को आलोकित कर सकता है और हमारे जीवन को ईश्वरीय चेतना की ओर ले जा सकता है।

'दीपावली' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है — 'दीप' अर्थात् दीपक, और 'आवली' अर्थात् पंक्ति। अर्थात् दीपों की पंक्ति का पर्व — जो प्रकाश का अंधकार पर, ज्ञान का अज्ञान पर, और भक्ति का ईश्वर-विस्मृति पर विजय का प्रतीक है।

पारंपरिक रूप से दीपावली भगवान श्रीराम के 14 वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटने की हर्षोल्लासपूर्ण घटना का प्रतीक है। अयोध्यावासियों ने अपने प्रिय प्रभु की वापसी पर समस्त नगरी को दीपों से सजाया, ताकि वे अपने प्रेम और आनंद को व्यक्त कर सकें।

ईश्वर की उपस्थिति के बिना जीवन रिक्त हो जाता है। जब उनके प्रकाश का अभाव होता है, तब अंधकार भय, निराशा, चिंता, मोह और शोक के रूप में हमारे भीतर प्रवेश कर जाता है।

राम का अयोध्या लौटना इस बात का प्रतीक है कि हमें अपने हृदय में भी प्रभु को वापस आमंत्रित करना चाहिए। जैसे हम बाहर दीपक जलाते हैं, वैसे ही हमें अपने भीतर के दीपक की भी चिंता करनी चाहिए। अक्सर हमारी चेतना भौतिक इच्छाओं और क्षणिक सुखों में उलझ जाती है, जिससे हमारा अंतःकरण अंधकारमय और अशांत हो जाता है। जब हृदय में ईश्वरीय ज्ञान और भक्ति का प्रकाश भरता है, तब यह अंधकार मिट जाता है।

भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि वे अपने भक्तों के हृदय में स्थित अज्ञानजन्य अंधकार को ज्ञान के दीपक से स्वयं नष्ट कर देते हैं। ऐसा जीवन स्थिर, शांत और दृढ़ रहता है, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी क्यों न हों।

जैसे अयोध्यावासी राम की प्रतीक्षा कर रहे थे, वैसे ही हमारे हृदय को भी प्रभु की उपस्थिति की लालसा रखनी चाहिए। प्रभु को देखने, उनकी सेवा करने और उन्हें प्रसन्न करने की यही तीव्र अभिलाषा दीपावली का वास्तविक सार है।

इस दिन से जुड़ा एक अन्य सुंदर प्रसंग है — *दामोदर लीला* एक दिन माता यशोदा भगवान श्रीकृष्ण को स्वादिष्ट माखन खिलाना चाहती थीं। जब वे मथनी से माखन मथ रही थीं, श्रीकृष्ण उनकी गोद में बैठे थे। तभी चूल्हे पर रखा दूध उफनने लगा, तो यशोदा जी तुरंत रसोई में भागीं।

माता का ध्यान हटने पर श्रीकृष्ण नाराज़ हो गए। उन्होंने पत्थर उठाकर माखन का घड़ा तोड़ दिया और लकड़ी के ओखल पर चढ़कर माखन खाने लगे। जब यशोदा लौटीं और यह सब देखा, तो वे उन्हें पकड़ने दौड़ीं। श्रीकृष्ण भागते रहे, पर अंततः माता ने उन्हें पकड़ लिया और दुलारभरी डाँट के रूप में उन्हें ओखल से बाँधने लगीं।

परंतु आश्चर्य की बात यह थी कि जितनी भी रस्सियाँ जोड़ी जातीं, वे हमेशा *दो अंगुल* कम पड़ जाती थीं। जब अंततः यशोदा जी थक गईं, तब श्रीकृष्ण ने स्वयं को बंध जाने की अनुमति दी।

ये *दो अंगुलें* प्रतीक हैं — एक हमारी *सच्ची साधना* की और दूसरी *भगवान की कृपा* की। बिना प्रयास के कृपा नहीं मिलती, और बिना कृपा के प्रयास अधूरा रहता है। दोनों मिलकर ही पूर्णता लाते हैं। जब हम प्रभु को प्रसन्न करने का सच्चा प्रयास करते हैं और उनकी करुणा पर आश्रित रहते हैं, तब वे हमारे प्रेम से बंध जाते हैं।

अतः जब हम दीपावली मनाएँ, तो केवल बाहर के दीपक ही नहीं, बल्कि अपने *हृदय के भीतर भी भक्ति का दीपक* प्रज्वलित करें — ताकि भगवान सदा हमारे भीतर विराजमान रहें।

****

रिजवान अथर
उप प्रबन्धक(सचि.) इरेडा

"स्वास्थ्य ही धन है"

"स्वास्थ्य ही धन है" कहावत का अर्थ है कि अच्छा स्वास्थ्य धन से भी अधिक मूल्यवान है। एक स्वस्थ शरीर और मन काम करने, अध्ययन करने और जीवन का आनंद लेने के लिए ऊर्जा और एकाग्रता प्रदान करते हैं, जबकि बीमारी अपार धन-संपत्ति को भी निरर्थक बना सकती है। स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, उचित आराम और तनाव प्रबंधन जैसी जीवनशैली अपनानी पड़ती है। अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा करने से महंगे चिकित्सा बिल और जीवन की गुणवत्ता में गिरावट आ सकती है, जिससे यह विचार पुष्ट होता है कि स्वास्थ्य एक अमूल्य खजाना है जिसकी रक्षा की जानी चाहिए। अगर हमारा स्वास्थ्य अच्छा है तो हम कुछ भी हासिल कर सकते हैं। सिर्फ़ धन होना ही काफ़ी नहीं है, हम धन का सदुपयोग तभी कर सकते हैं जब हमारा स्वास्थ्य अच्छा हो।
इस संदर्भ में ये कुछ तथ्य हैं:

1. आप अच्छे धन के बिना रह सकते हैं, लेकिन अच्छे स्वास्थ्य के बिना जीवित रहना असंभव है।
2. दूसरी बात, अगर आप स्वस्थ हैं तो आप धन कमा सकते हैं, लेकिन अगर आप धनवान हैं और अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता न देने के कारण किसी घातक या दीर्घकालिक बीमारी की चपेट में आ जाते हैं, तो आपका धन किसी काम का नहीं रहेगा।
3. आपको अपने लिए स्वस्थ रहने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन आपको अपने बेटे/बेटी के लिए फिट रहना होगा ताकि जब उसे आपकी ज़रूरत हो, तो आप उसका साथ दे सकें। आपको अपनी पत्नी के लिए भी फिट रहना होगा, जो जीवन के हर पहलू में आपकी मदद चाहती है और अंततः मैं कहूँगा कि आपका स्वास्थ्य आपके और आपके परिवार के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है।
4. एक कहावत है "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है" इसलिए उस स्वस्थ मन को पाने के लिए आपको अपने शरीर को स्वस्थ बनाना होगा और आपको जो संतुष्टि मिलेगी वह अद्भुत होगी।

एक स्वस्थ जीवनशैली में संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और पर्याप्त नींद शामिल है। शारीरिक शक्ति और रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए जंक फ़ूड से परहेज़ करते हुए भरपूर मात्रा में फल और सब्ज़ियाँ खाना ज़रूरी है। दिन भर पर्याप्त पानी पीकर हाइड्रेटेड रहना अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण घटक है। इसके अतिरिक्त, स्वस्थ मन और शरीर के लिए तनाव प्रबंधन और पर्याप्त आराम की आवश्यकता होती है।

<u>आहार और जलयोजन :</u>

- संतुलित आहार लें: साबुत अनाज, लीन प्रोटीन, फल और सब्जियों पर ध्यान दें, साथ ही नमक, चीनी और अस्वास्थ्यकर वसा का सेवन कम करें।
- हाइड्रेटेड रहें: खूब सारे तरल पदार्थ, खासकर पानी पिएं।
- अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों का सेवन सीमित करें: मीठे पेय पदार्थों, प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों और तले हुए खाद्य पदार्थों का सेवन कम करें।
- स्वस्थ वजन बनाए रखें: आहार और व्यायाम के माध्यम से स्वस्थ शरीर का वजन प्राप्त करें और उसे बनाए रखें।

शारीरिक गतिविधि और नींद :

- नियमित व्यायाम करें: अपने हृदय और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए नियमित शारीरिक गतिविधि का लक्ष्य रखें।
- नींद को प्राथमिकता दें: अपने शरीर को आराम और ऊर्जा प्रदान करने के लिए पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण नींद लें।

मानसिक और सामाजिक कल्याण :

- तनाव प्रबंधन: तनाव प्रबंधन के स्वस्थ तरीके खोजें, जैसे ध्यान, गहरी साँस लेना, या दोस्तों से बात करना।
- सामाजिक रूप से सक्रिय रहें: दोस्तों और परिवार के साथ संपर्क बनाए रखें और अपने समुदाय में शामिल हों।
- अपने दिमाग को सक्रिय रखें: आजीवन सीखने और नई गतिविधियों के माध्यम से अपने मस्तिष्क को चुनौती दें।

अन्य महत्वपूर्ण सुझाव :

- धूम्रपान न करें: धूम्रपान छोड़ने से स्वास्थ्य संबंधी कई लाभ होते हैं।
- शराब ना पिएँ : शराब की आदत अगर हो तो उसको छोड दें।
- नियमित जाँच करवाएँ: नियमित स्वास्थ्य जाँच और स्क्रीनिंग के लिए अपने डॉक्टर से मिलें।

अंत में मैं यही कहना चाहता हूँ कि यदि हम बीमार हैं, तो हम जीवन का आनंद नहीं ले सकते, भले ही हम अमीर हों। एक स्वस्थ व्यक्ति खुशी से काम कर सकता है, पढ़ाई कर सकता है और खेल सकता है। अच्छा खाना खाने और साफ पानी पीने से हम फिट रहते हैं। समय पर सोना और व्यायाम करना हमारे शरीर को मजबूत रहने में मदद करता है।

****

अनुष्का कुमारी

उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा), इरेडा

यात्रा-वृतांत : "झीलों की नगरी – उदयपुर की अविस्मरणीय यात्रा"

राजस्थान की धरती अपनी वीरता, संस्कृति और अद्भुत स्थापत्य कला के लिए विश्व प्रसिद्ध है। उसी राजस्थानी धरोहर का मोती है **उदयपुर**, जिसे प्रेम से *"झीलों की नगरी"* कहा जाता है। इस वर्ष नवंबर में, सुखद मौसम के दौरान, मैं अपने परिवार के साथ उदयपुर यात्रा पर गई—एक ऐसी यात्रा जिसने मन को अविस्मरणीय अनुभवों से भर दिया

यात्रा की शुरुआत

यात्रा का आरंभ **चेतक एक्सप्रेस** से हुआ, जो रात 8:30 बजे दिल्ली के सराय रोहिल्ला स्टेशन से रवाना हुई । सुबह लगभग **7:00 बजे** जब ट्रेन **उदयपुर सिटी स्टेशन** पर पहुँची, तो सुनहरी धूप की नरम किरणों और पारंपरिक राजस्थानी तिलकार-संगीत ने शहर में स्वागत जैसी अनुभूति कराई। होटल पहुंचकर कुछ देर विश्राम किया।

सिटी पैलेस – वैभव का प्रतीक

उसी दिन तैयार होकर हम उत्साह के साथ शहर की पहली झलक देखने निकल पड़े।दिन सबसे पहले हमने पाया **सिटी पैलेस** का अद्भुत सौंदर्य। पिछोला झील के किनारे स्थित यह महल राजपूताना शौर्य और कला की उत्कृष्ट मिसाल है। संगमरमर की नक्काशियाँ, रंगीन काँच की खिड़कियाँ और ऐतिहासिक चित्रों से सजी दीवारें देखते-देखते समय कैसे बीत गया पता ही नहीं चला। महल की ऊँचाई से झील और

शहर का नज़ारा मन को थाम लेता है।

पिछोला झील में बोट राइड

शाम को पहुँचे **लेक पिछोला**—सुनहरी ढलती रोशनी में झील मानो चांदी-सा चमक रही थी। बोट राइड करते हुए हवा की ठंडक, पक्षियों की आवाज़ और पानी की लहरों की धुन ने एक अद्भुत शांति दी। **जग मंदिर** की झिलमिल रोशनियों ने पूरे वातावरण को और भी मोहक बना दिया। यह पल सचमुच यादों में हमेशा जीवित रहेगा।

सहेलियों की बाड़ी और फतहसागर झील

अगले दिन हमने **सहेलियों की बाड़ी** का भ्रमण किया। यहां के फव्वारे, हरियाली और सुंदर बगीचे राजकुमारियों के पुराने समय की याद दिलाते हैं। दोपहर बाद पहुँचे **फतहसागर झील**—यह युवाओं की पसंदीदा जगह है। झील किनारे बैठकर राजस्थानी पकौड़ों और कुल्हड़ की चाय का स्वाद... वाह! बस जीवन का असली आनंद वही था।

मन को छू लेने वाली विदाई

तीन दिन कैसे बीत गए, पता ही नहीं चला। शहर की स्वच्छता, लोगों का सहज व्यवहार और हर मोड़ पर बसी संस्कृति—सबने दिल जीत लिया। वापसी के समय मन में केवल एक ही भावना थी—

उदयपुर सिर्फ घूमने की जगह नहीं, बल्कि महसूस करने का अनुभव है। उदयपुर न केवल अपनी झीलों और महलों के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि अपने राजस्थानी व्यंजनों की सुगंध के लिए भी याद रह जाता है।

****

हजारी लाल
सहायक प्रबंधक (सामान्य) , इरेडा

यात्रा वृतांत
"नैनीताल का एक दिन"

पहाड़ी रास्तों पर हवा में ठंडक घुली हुई थी। जैसे-जैसे हमारी कार नैनीताल की ओर चढ़ रही थी, नीचे फैली घाटी के दृश्य और मनमोहक होते जा रहे थे। रास्ते में चीड़ और देवदार के पेड़ों की सुगंध कार की खिड़कियों से भीतर भरती चली गई। दूर-दूर तक फैले बादल कभी पहाड़ों को छूते, कभी हमारी ओर झुकते प्रतीत होते—मानो स्वागत कर रहे हों ।

झील के किनारे पहुँचना तो जैसे किसी चित्र में प्रवेश कर जाना था। हरी, शांत, लंबी झील—उस पर तैरती रंगों से भरी नावें, और पीछे खड़े ऊँचे पहाड़। पानी में झिलमिलाती धूप किसी छोटे-से उत्सव की तरह लग रही थी। किनारे बैठे बतखों के समूह ने माहौल को और भी जीवंत बना दिया।

हमने झील में नौकायन किया। पानी पर लहरों की हल्की थपकियाँ और दूर से आती पवनघंटियों की आवाज़—सब कुछ किसी संगीत की तरह था। नाविक ने झील की कहानी सुनाई—कैसे इसका आकार आँख की तरह है और इसी कारण इसे 'नैनीताल' कहा जाता है। हम उस शांत लहरों पर ऐसे तैर रहे थे, जैसे समय भी धीमा हो गया हो।

नौकायन के बाद हम मसाला चाय लेकर झील किनारे बैठ गए। चाय की गर्माहट और पहाड़ों की ठंडी हवा ने एक अद्भुत संतुलन बना दिया। आसपास पर्यटकों की हल्की बातचीत, बच्चों की खिलखिलाहट और दुकानों से आती भुट्टे की सुगंध उस क्षण को और खास बना रही थी।

दोपहर को हम 'टिफ़िन टॉप' पहुँचे। वहाँ से पूरा नैनीताल नीचे बिछा दिखाई देता है—झील मानो किसी कन्या की पलकों के बीच छुपा हुआ नीलम। हवा यहाँ और भी तेज़ थी, जो चेहरे को हल्के-हल्के छूती हुई मन को ताज़गी देती रही। पहाड़ों की रूप-रेखा जैसे किसी कलाकार ने बारीकी से उकेरी हो।

टिफ़िन टॉप पर कुछ घोड़े भी खड़े थे। बच्चे उत्साह से घुड़सवारी करते दिख रहे थे। हमने भी कुछ देर वहाँ घूमकर प्रकृति की गोद में शांति से समय बिताया—ऐसा समय जिसमें कोई जल्दी नहीं, कोई लक्ष्य नहीं, बस दृश्य और अनुभूति।

शाम ढले मॉल रोड की चहल-पहल ने दिन को एक सुंदर विदाई दी। दुकानों की रोशनी झील के पानी में परछाइयाँ बनाकर चमक रही थीं। गरम मूंगफली खाते हुए हम धीरे-धीरे सड़क पर टहलते रहे। पहाड़ों की हवाएँ शाम के साथ थोड़ी ठंडी हो चली थीं, पर माहौल की गर्मजोशी ने पूरे दिन को खूबसूरत समापन दिया।

नैनीताल सिर्फ एक पर्यटन स्थल नहीं, एक अनुभव है—जिसे मन हमेशा संजोकर रखता है। यह वह जगह है जहाँ प्रकृति का हर दृश्य एक कहानी सुनाता है और हर पल स्मृति बनकर दिल में बस जाता है।

****

साक्षी साव
कार्यपालक प्रशिक्षु, इरेडा

सपनों की अनन्त यात्रा

ज़िंदगी की पगडंडी पर चलते हुए
हम कभी ऊँचाइयों को छूते हैं,
कभी अँधेरों की घाटियों में खो जाते हैं—
पर इन सबके बीच
कुछ सपने ऐसे होते हैं
जो उम्र भर हमारे भीतर जलते रहते हैं।
कभी अपने पाँच बरस के उस छोटे से रूप की याद आती है—
जिसकी आँखों में दुनिया को जीत लेने की चमक थी,
जो बिना थके, बिना डरे
एक पहचान बनाने का सपना बुनता था।
वही मासूम सपने आज भी
हमारी दिशा और दृष्टि बनकर साथ चलते हैं।
सपने हमारे भीतर चिंगारी जगाते हैं,
मार्ग दिखाते हैं,
और कठिन दिनों में ढाल बनकर खड़े रहते हैं।
हम ही अपनी राह के ध्रुवतारा हैं
जो हर तूफ़ान में खुद को सँभालते हुए आगे बढ़ते हैं।
क्योंकि
कुछ सपने कभी नहीं बुझते।
हर छोटी जीत से मिलने वाली प्रसन्नता,
हर नए अनुभव से बनने वाले बंधन
ये मन और आत्मा के विकास की सीढ़ियाँ होती हैं।
सकारात्मकता और संदेह के बीच चलने वाला द्वंद्व
हमें भले ही थका दे,
पर सपने हमेशा हमें थाम लेते हैं।
कभी आत्म-संदेह की लहरें उठती हैं,
कभी चिंता मन को डूबो देती है,
कभी अनिश्चितताओं का अँधेरा घेर लेता है
पर ऐसे ही क्षणों में
पुरानी जीतों की स्मृतियाँ धीरे से कान में कहती हैं
तुम रुकने के लिए नहीं बने,
तुम्हारे सपने अभी ज़िंदा हैं।"
यही सपने हर नए सवेर में
हमें फिर से शुरुआत करने का साहस देते हैं,
हमारी यात्रा को अर्थ देते हैं,
और एक उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा बनते हैं।
क्योंकि सच यही है—
कुछ सपने कभी नहीं मिटते,
और वे ही हमें निरंतर सपने देखने का हौसला देते हैं।

शुभम सिंह
कार्यपालक प्रशिक्षु (परियोजना)

ऑटोबायोग्राफी ऑफ़ योगी – सारांश

हाल ही में मैंने एक किताब पढ़ी, जिसका नाम है "*ऑटोबायोग्राफी ऑफ़ योगी*" जिससे लिखा है "*परमहंस योगानंद जी*" ने। मेरे लिए यह किताब सिर्फ एक आध्यात्मिक यात्रा नहीं बल्कि एक तरह की सांस्कृतिक खिड़की भी बन गई। योगानंद जी अपने बचपन से लेकर गुरु श्री युक्तेस्वर से मिलने तक की कहानी जिस सरलता से बताते हैं, वह पाठक को उसी दुनिया में खींच ले जाती है। यह एक ऐसी दुनिया जहाँ चमत्कार, ध्यान और साधना किसी कल्पना की चीज़ नहीं बल्कि रोज़मर्रा का हिस्सा लगते हैं। किताब में अलग-अलग संतों, योगियों और साधकों से मुलाकातों का ज़िक्र न सिर्फ रोचक है, बल्कि यह भी दिखाता है कि दुनिया के हर हिस्से में लोग अपने-अपने तरीकों से एक ही सच की तलाश करते हैं।

सबसे दिलचस्प बात मुझे यह लगी कि चाहे कहानी भारत की गलियों में घूमती हो या अमेरिका की बड़े शहरों में, योगानंद जी बार-बार एक ही संदेश पर लौटते हैं कि ईश्वर एक है, बस हम उसे अलग-अलग नामों और रूपों में पुकारते हैं। जब वे लाहिड़ी महाशय, श्री युक्तेस्वर और अन्य संतों के अनुभव बताते हैं, तो महसूस होता है कि आध्यात्मिकता किसी धर्म या सीमा में बंधी चीज़ नहीं है। यह वही अनुभव है जो वे अमेरिका पहुँचकर बताते हैं, जब लोग अलग पृष्ठभूमि से होते हुए भी ध्यान और आंतरिक शांति की ओर आकर्षित होते हैं।

आज के दौर में, जब समाज अक्सर धर्म, जाति या पहचान के आधार पर बँटता दिखाई देता है, यह किताब एक बहुत सरल लेकिन ज़रूरी याद दिलाती है कि हमारी यात्रा एक ही स्रोत की ओर है। हम सब एक ही सूत्र में पिरोये हुए मोती है जिनकी अनेकता और भिन्नता ही आभूषण को और सुन्दर बनती है। अगर हम इस सच्चाई को समझ लें तो शायद दुनिया में संवाद और शांति दोनों थोड़ा आसान हो जाएँ। इस किताब ने मुझे यह एहसास दिलाया कि विविधता संघर्ष का कारण नहीं, बल्कि ईश्वर को समझने के अलग-अलग रास्तों का सुंदर विस्तार है। ऐसे समय में यह संदेश पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण लगता है, और शायद यही वजह है कि यह किताब पढ़ने के बाद मन कुछ हल्का और दुनिया थोड़ी अधिक जुड़ी हुई महसूस होती है।

****

वरुण भारद्वाज,
उप प्रबंधक (राजभाषा)
केंद्रीय भंडारण निगम, निगमित कार्यालय

हिंदी भाषा के विकास में पत्रकारिता की भूमिका

भाषा का जन्म, ज्ञान प्राप्ति की उत्कंठा, चिंतन और अभिव्यक्ति की आकांक्षा से होता है। उसी तरह समाज में एक-दूसरे के बारे में जानने की प्रबल इच्छा-शक्ति ने समाचार पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन को जन्म दिया। पहले जो ज्ञानरूपी दिव्यशक्ति, सीमित लोगों के ही कब्जे में थी, पत्रकारिता ने उसे जन-स्वर देकर सर्वसुलभ बनाया। वस्तुतः 'सर्वजन सुखाय -सर्वजन हिताय के प्रति लोगों की व्यग्रता ने पत्रकारिता को जन्म दिया। पत्रकारिता जन-मानस की अभिव्यक्ति है। यह किसी भी राष्ट्र और समाज की धड़कन है। कभी काशी के संभ्रात नागरिक यही कहा करते थे –

चना चबेना गंगा जल और 'आज' अखबार।
काशी कबहुँ न छोड़िए विश्वनाथ दरबार।

हिन्दी आर्य संस्कृति की संवाहिका है। इस भाषा का विकास भारतीय लोक चेतना का विकास है। हिंदी ऐसी जीवंत भाषा है जिसमें अन्तर्निहित रचनात्मक शक्ति है व्यवहार धर्मिता है और गतिमयता है। नवजागरण और मुक्ति की कामना के प्रसार में हिन्दी का योगदान अविस्मरणीय है। राजाराम मोहन राय और केशवचन्द्र सेन ने हिन्दी को ही भारत की एकमात्र मुक्तिदायिनी भाषा माना है। महर्षि दयानंद हिन्दी के सर्वस्व माने जाते हैं। बंकिमचन्द्र चटर्जी ने कहा है कि "हिन्दी एक दिन भारत की राष्ट्रभाषा होकर रहेगी।

साहित्यकार एवं पत्रकार शोषण तथा दासता को दूर करने के लिए और समाज को सन्मार्ग पर लाने के लिए दोनों कटिबद्ध होते हैं। स्थूल तथा सूक्ष्म के अवलोकन एवं विवेचन में साहित्यकार सफल होता है परंतु पत्रकार भी उससे पीछे नहीं रहता। लौकिक एवं अलौकिक जगत मानव जीवन को जिस प्रकार प्रभावित करते रहते है और जिस प्रकार मानव उन्हें प्रभावित करता रहता है उनका साक्षात्कार और चित्रण करना पत्रकार का मुख्य कार्य होता है। पत्र वे दर्पण है, जिनमें पत्रकार जगत के स्वरुप का प्रतिबिंब होता है। पत्र वे शिलापट हैं जिन पर अपनी लेखनी के द्वारा वह संसार को चित्रित कर देता है। मैथ्यू आर्नल्ड ने पत्रकारिता को शीघ्रता में लिखा जाने वाला साहित्य कहा है। हम जानते है कि पत्र के विविध स्तम्भों में लिखी गई शाश्वत साहित्य की बातें उपलब्ध होती हैं। पत्र-पत्रिकाएँ साहित्यिक विधाओं की जन्मदात्री हैं। राष्ट्र की आकांक्षाओं, विचारों और प्रेरणाओं की वाहिका के रुप में पत्रों ने हिन्दी को राष्ट्रवाणी का रुप दिया। वर्ष 1919 में गोरखपुर से प्रकाशित साप्ताहिक 'स्वदेश' ने स्वतंत्रता आंदोलन को उत्तर प्रदेश में प्रसारित करने का कार्य इस पत्र ने कुशलता से किया, इसके मुख पृष्ठ पर सिद्धांत वाक्य के रूप में निम्न पंक्तियां छपती थीं -

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं ।
वह हृदय नहीं पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

हिन्दी पत्रकारिता का उदभव चरण 1826 से 1867 रहा है। हिन्दी का प्रथम समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' को माना जाता है। इसके संपादक युगल किशोर शुक्ल थे। इसका पहला अंक 30 मई, 1826 को निकला

था। 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन भारतवासियों के हित हेतु अर्थात उन्हें पराधीनता से मुक्ति दिलाकर स्वतंत्र दृष्टि प्रदान करने के निमित्त से हुआ था। इसे हिन्दी पत्रकारिता की आदि प्रतिज्ञा मानी जाती है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य भी स्मरणीय है कि 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन हिन्दी के नये ज्ञान मार्तण्ड के उदय की विज्ञप्ति थी। इसके पश्चात अनेक पत्र-पत्रिकाएँ निकली जिनमें प्रमुख है- 'बनारस अखबार', काशी, 1845, 'मार्तण्ड' कलकत्ता, 1846, 'जगदीश भास्कर' कलकत्ता, 1848, 'मालवा अखबार इन्दौर, 1848, 'सुधाकर बनारस', 1850 ने आजादी के लिए क्रांतिकारी भूमिका निभाई। इन पत्रों में 'भारत मित्र' सारसुधानिधि', उचित वक्ता', आदि कुछ ऐसे पत्र उभरकर सामने आए जिन्होंने एक स्वर से जातीय प्रतिष्ठा का उद्बोधन करते हुए खड़ी बोली के विकास और उसे राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

भारतेन्दु युग - इस युग की सबसे बडी देन है हिन्दी को परिष्कृत रुप प्रदान करना । सन 1873 की 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका में उन्होंने स्वतः लिखा, "हिन्दी नयी चाल में सर्वप्रथम भारतेन्दु ने ही भाषा में संक्रमण की स्थिति को समाप्त किया, एक मध्यम मार्ग को अपनाया तथा उसे सर्वसम्मत स्वरुप प्रदान किया। अंग्रेजी, बंगला, फारसी, अरबी से संक्रमित कुठित बोझिल हिन्दी को उबारने का श्रेयस्कर कार्य भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया। इन्होंने लगभग पच्चीस पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से सहयोग दिया है। 'कविवचन सुधा, काशी 1867, 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', काशी 1874, 'हिन्दी प्रदीप' प्रयाग, 1878, 'सारसुधानिधि, 1879, 'उचित वक्ता', 'हिन्दी बंगवसी', कलकत्ता, 1890, 'नागरीप्रचारणी पत्रिका', 1898, 'हिन्दोस्तान' 1885 आदि उल्लेखनीय है।

तिलक युग - इस युग में बाल गंगाधर तिलक ने 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का नारा लगाया। यह नारा केवल स्वराज्य के लिए ही नहीं था बल्कि इसके माध्यम से स्वदेशी स्वभाषा को भी इन्होंने अपनाया। इसलिए बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दो दशकों की पत्रकारिता में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देता है। इस युग में प्रकाशित होने वाले प्रमुख पत्र थे- 'सरस्वती', 1900, इस पत्रिका ने हिन्दी भाषा विकास में बहुत योगदान दिया है। 'देव नागर, कलकत्ता 1907, 'नृसिंह' कलकत्ता 1907, 'विश्वमित्र' कलकत्ता 1907, 'केसरी' नागपुर 1903, 'अभ्युदय', 'प्रताप', 'स्वदेशी', 'इंन्दु', 1909, 'नव जीवन' 1915, 'ज्ञान शक्ति' और हिन्दी भाषा इस पत्रिका के संपादकीय विचार तथा विविध लेखों से स्पष्ट होता है कि हिन्दी की वकालत करने वाला यदि बीसवीं सदी के दूसरे दशक में पूर्वांचल में कोई पत्र था तो 'ज्ञानशक्ति' ही था।

गांधी युग - पत्रकारिता तो मानो गांधीजी के रग-रग में समाई हुई थी। न्याय की प्रतिष्ठा में अखबारों की महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य भूमिका को लक्ष्य करते हुए उन्होंने कहा था- **"ऐसी कोई भी लड़ाई जिसका आधार आत्मबल हो, अखबार की सहायता के बिना नहीं चलाई जा सकती।** अगर मैंने अखबार निकालकर दक्षिण अफ्रीका में बसी हुई भारतीय जमात को उसकी स्थिति न समझाई होती और सारी दुनिया में फैले हुए भारतीयों को दक्षिण अफ्रीका में क्या कुछ हो रहा है, इससे 'इंडियन ओपिनियन' के सहारे अवगत न रखा होता तो मैं अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकता था। इस तरह से मुझे भरोसा हो गया है कि अहिंसक उपायों से सत्य की विजय के लिए अखबार एक बहुत ही महत्वपूर्ण और अनिवार्य साधन है। गांधीजी ने 4 जून, सन 1903 को चार भाषाओं में 'इंडियन ओपिनियन साप्ताहिक शुरु किया जिसमें एक ही अंक में हिन्दी अंग्रेजी, गुजराती और तमिल भाषा में छह कालम प्रकाशित होते थे। आगे चलकर उन्होंने 'नव जीवन', 'हिन्दी नवजीवन पत्रों के नाम बदलकर 'हरिजन' रख दिए। इस युग के प्रमुख पत्र थे 'स्वार्थ,' 1919, 'श्रीशारदा,' 1920, 'आज', बनारस 1920, 'चॉद, 1920, 'माधुरी', 1922, 'स्वतंत्र कलकत्ता' 1920, 'कर्मवीर', जबलपुर 1920, 'सैनिक' आगरा, 1925, 'महारथी', दिल्ली 1925, 'संसार', काशी 1947 हिन्दी की पोषिका 'वीणा' 1924 इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा का प्रचार तथा हिन्दी साहित्य के प्रति अनुराग पैदा करना रहा है। अनेक साहित्यिक पत्रों का प्रारंभ इस युग में हुआ। भारतमित्र, कलकत्ता समाचार, मतवाला, सुधा, चांद, माधुरी, हंस, विशाल भारत आदि। इन पत्रिकाओं ने हिन्दी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

स्वातंत्र्योतर पत्रकारिता 1947-1964 के युग में देश में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन बहुत बड़ी संख्या में हुआ। जनमत संरचना और जन शिक्षण की दिशा में पत्रकारों ने जिस निष्ठा से आजादी की लड़ाई के दौरान कार्य किया था, वह निष्ठा भाव या मिशन स्वतंत्र भारत में गायब हो गया। मिशन पर व्यावसायिकता हावी हो गई

लेकिन अपनी व्यावसायिक प्रवृत्ति के बावजूद हिंदी पत्रकारिता ने आर्थिक और सामाजिक विकास में जनमानस की सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित किया है। आज भले ही व्यावसायिकता हावी हुई हो पर कुछ पत्र-पत्रिकाएँ निश्चित रुप से हिन्दी भाषा का विकास कर रही है। भारतीय लोकतंत्र को सफल बनाने में पत्रकारिता का योगदान महत्वपूर्ण है।

वर्तमान में हिंदी पत्रकारिता में इलेक्ट्रानिक मीडिया ने अपना वर्चस्व कायम कर लिया है और वह आज बहुत विकसित है। फिर भी वह केवल संदेश दे रहा है। आज भी प्रिंट मीडिया की शक्ति ज्यादा ही है। पत्रकारिता का क्षेत्र अब बहुत विस्तृत हो गया है। इसलिए हिन्दी भाषा आज विश्व में बहुतायत लोगों द्वारा बोली जाती है। 'हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा' के अनुरूप हिंदी भाषा भारतीयों के हित साधन में हिंदी पत्रकारिता सतत अग्रणी रही है। 'उदन्त मार्तण्ड' ने राष्ट्र के पराक्रम को पहचानने का मूल मंत्र उद्घोषित किया। 'कविवचन सुधा', 'हिंदी प्रदीप', 'ब्राह्माण' 'हिन्दोस्थान', 'सरस्वती', 'प्रताप', 'आज' 'स्वदेश' जैसे अगणित पत्रों ने राष्ट्र प्रेम की ज्वाला जगायी तथा हिंदी भाषा को समृद्ध किया। परिणामस्वरूप वैश्वीकरण के इस युग में आज हिंदी भाषा विश्व की अग्रिम पंक्ति की भाषा बन गई है।

****

रोहित कुमार साव
उप प्रबंधक (राजभाषा)

ऊर्जा का रहस्य

हम सभी के जिंदगी में हर पल कुछ न कुछ घटित होता रहता है और कभी-कभी हम भी कुछ आश्चर्यजनक अनुभव करते है और दिमाग में एक लंबी यात्रा शुरू हो जाती है। अभी बैठा-बैठा कुछ सोच रहा था कि अचानक मेरी नज़र घूमते पंखे पर पड़ी और एकदम से मेरे दिमाग में यह ख्याल आया कि कैसे इंसान ने केवल ऊर्जा को समझ कर एक ऊर्जा को दूसरी ऊर्जा में बदलना सीख लिया और उसी समझ ने मनुष्य के जीवन को इतना आसान बना दिया। कुछ भी यूँ ही नहीं हो रहा, हर चीज़ किसी न किसी कारण से हो रही है, सब कुछ एक श्रृंखला में जुड़ा हुआ है।

इस चीज को सरल रूप में समझने के लिए बिजली बनाने वाले जनरेटर को उदाहरण के रूप में देख सकते है। अगर हम जनरेटर के माध्यम से बिजली बनने की बात करें तो हम डीज़ल डालते हैं, डीज़ल स्प्रे होता है, जलता है, पिस्टन को धक्का देता है, पिस्टन घूमता है और उसी से जुड़ा हुआ मैग्नेट, जिसे रोटर कहते हैं, घूमने लगता है। उस घूमते हुए मैग्नेट के बीच में पड़ा हुआ तार बार-बार तेज़ी से बदलते हुए चुंबकीय क्षेत्र से गुजरता है और उस तार में पहले से मौजूद फ्री इलेक्ट्रॉन इस बदलते हुए क्षेत्र के कारण खिंचने लगते हैं और उस खिंचाव से फ्री इलेक्ट्रॉन तेजी से एक दिशा में हिलने लगते है और एक दिशा में बहने लगते हैं, इसी बहाव को हम करंट कहते हैं।

जितनी तेज़ी से यह घुमाव होता है, जितनी ज़्यादा स्पीड और फ़्रीक्वेंसी से चुंबकीय क्षेत्र बदलता है, उतने ही ज़ोर और दबाव से इलेक्ट्रॉन को धक्का मिलता है और उतना ही ज़्यादा वोल्टेज बनता है, यानी वोल्टेज का मतलब यही है कि फ्री इलेक्ट्रॉन को कितनी ताक़त और दबाव के साथ चलाया जा रहा है।

यही ऊर्जा तारों के सहारे हमारे घर तक पहुँचती है और फिर मेरे ऊपर घूमते हुए इसी पंखे में दोबारा अपना रूप बदल लेती है। अब वही करंट इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड की वजह से घूमने की ऊर्जा में बदल जाता है और पंखा चलने लगता है। न कहीं कुछ पैदा हुआ, न कहीं कुछ नष्ट हुआ बस ऊर्जा ने अपना रूप बदला।

और यहीं से बात केवल मशीनों तक सीमित नहीं रहती। यही नियम पूरे ब्रह्मांड पर लागू होता है कि ऊर्जा न तो उत्पन्न की जा सकती है और न ही मिटाई जा सकती है, वह केवल एक रूप से दूसरे रूप में बदलती रहती है।

ठीक यही बात इंसान के भीतर भी घट रही है। हमारे अंदर भी ऊर्जा है- कुछ सोचने की, अपनी भावनाओं और इच्छाओं को अभिव्यक्त करने की। अगर वही ऊर्जा डर, आलस्य या भ्रम में फँसी रहे तो जीवन भारी लगने लगता है, लेकिन अगर वही ऊर्जा समझ, जागरूकता और दिशा पा ले तो वही साधारण इंसान असाधारण काम कर सकता है।

मतलब अगर इंसान ने बाहर की दुनिया में ऊर्जा को समझ कर मशीनें चला लीं, तो भीतर की दुनिया में भी अगर वह अपनी ऊर्जा को पहचान ले, जगा ले और सही दिशा में बदल दे, तो हर इंसान के भीतर छुपा हुआ पोटेंशियल जाग सकता है। सब कुछ संभव है, क्योंकि अंत में जीवन भी ऊर्जा का ही एक रूप है बस उसे किस रूप में बदलना है, यही समझ आ जाए तो जीना अपने-आप आनंद बन जाता है।

अपने भीतर के फ्री इलेक्ट्रॉन्स को एक दिशा दे जिससे वो एक दिशा में तेजी से इस दुनिया में आपका करेंट पैदा कर सके।

शाश्वत ऊर्जा

इरेडा

IREDA

एक बार इरेडा, सदैव इरेडा

(नवरत्न सीपीएसई)

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

पंजीकृत कार्यालय / Registered Office

प्रथम तल, कोर-4ए, ईस्ट कोर्ट, इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003,
दूरभाष / Phone +91-11-24682206-19 फैक्स / Fax +91-11-24682202

कॉर्पोरेट कार्यालय / Corporate Office

तीसरी मंजिल, अगस्त क्रांति भवन, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली - 110066
दूरभाष / Phone : +91-11-2671400-12 फैक्स / Fax +91-11-26717416

इरेडा व्यवसाय केंद्र / IREDA Business Centre

एनबीसीसी कॉम्प्लेक्स, ब्लॉक नंबर 2, प्लेट बी, 7वीं मंजिल, ईस्ट किदवई नगर, नई दिल्ली - 110023
दूरभाष / Phone : +91-11-24604157, 24347700-24347799

ई-मेल : cmd @ireda.in वेबसाइट : www.ireda.in

@IREDALimited @IREDALtd @iredaofficial